PAPER VIII(A)
UNIT II
SEMESTER II

TOPIC :-JOHN DEWEY 1PDF

DATE:- 4.8.2020

INDU SINHA

जॉन डीवी के विचार में क्रिया या गतिविधि आधारित बाल केन्द्रित शिक्षा

जॉन डीवी अनुभव को शिक्षा का केन्द्र बिन्दु मानते है। इनके अनुसार बच्चों को अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करने के अधिक से अधिक अवसर प्रदान किए जाने चाहिए किन्तु अवसरों की उपलब्धतता बच्चों के आयुवय व मानसिक स्तर के अनुकूल किया जाना चाहिए। डीवी शिक्षा का उद्देश्य इस रूप में निर्धारित करने का प्रयास करते है कि जिससे बच्चों का सर्वंगीण विकास हो सके व उनका भावी जीवन जीवन सुखमय हो सके साथ ही साथ वह एक समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सके।

डीवी बच्चों को करके सीखने एवं प्रयोग द्वारा शिक्षा प्रदान करने के पक्षधर थे। इनका मानना था कि इस पद्धति से बच्चों में सहयोग, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता आदि भावों का विकास होता है तथा मौलिकता, सृजनशीलता आदि के गुणों का उत्तरोत्तर विकास होता है। शिक्षा प्रदान करते समय बच्चों के समक्ष ऐसी परिस्थितिया तैयार या उत्पन्न की जानी चाहिए जो उनमें भौतिक एवं सामाजिक वातावरण से सम्बंधित समस्याओं का समाधान करने का कौशल का विकास कर सके।

डीवी जी का अभिमत था कि बच्चे को उसकी शिक्षा के लिए खुले एवं स्वतन्त्र वातावरण को प्रदान किया जाना चाहिए एवं उसके ऊपर किसी भी प्रकार के अनावश्यक दबाव व अंकुश या भय को आरोपित नहीं किया जाना चाहिए और न ही बच्चों को किसी भी प्रकार के नैतिक या अनैतिक कृत्यों या कार्यों को करने के लिए बाध्य किया जाना चाहिए क्योकिं इससे उनकी स्वतंत्रता, मूल प्रवृति एवं भावनाओं का विकास परिसीमित हो सकता है। बच्चों को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाना चाहिए जो उनके ज्ञानर्जन के लिए सर्वथा उपयुक्त हो साथ ही साथ बच्चों को क्रियाशील, जिज्ञासु व सीखने के लिए तत्पर रखने में सहायक हो। बच्चों को स्वक्रिया, गतिविधियों में प्रतिभाग करने एवं प्रयोग करने के समुचित अवसर दिए जाने चाहिए। डीवी जी ने अपने शैक्षिक विचारों को अपने ' प्रयोगशाला विद्यालय' में साकार रूप में दिया जहाँ पर बच्चों को स्वयं करके सीखने की शिक्षा एवं प्रेरणा दी जाती थी एवं उन्हें अपना कार्य चुनने, उसकों पूरा करने, अपने आदर्शों एवं मूल्यों के निर्माण लिए स्वतंत्रता प्रदान की जाती थी। इनका विचार था कि यदि बच्चों को स्वतंत्रता पूर्वक उसकी अपनी योग्यता, क्षमता, रूचि, गति एवं सामर्थ्य के अनुसार सीखने दिया जाए तो वह अपने रूचि के क्षेत्र में सदैव सफल रहेगें।

जॉन डीवी ने बाल केन्द्रित पद्धति शैक्षिक व्यवस्था का रूप प्रस्तुत जिसमें उन्होंने बच्चे की रूचि के अनुसार शिक्षा प्रदान किए जाने का सुझाव दिया। डीवी जी का मानना था कि बच्चे की रूचि एवं प्रयास

जॉन डीवी का जन्म 1859 ई. में अमेरिका के बर्लिंगटन, वरमोंट में हुआ। वरमोंट विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद वे बर्लिंगटन के निकट एक छोटे से ग्रामीण विद्यालय में एकमात्र शिक्षक के रूप में अध्यापन करने लगे। डीवी ने सन् 1884 ई. में मिशिगन विश्वविद्यालय में दर्शन और मनोविज्ञान के शिक्षक के रूप में अध्यापन प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने शिकागो विश्वविद्यालय में भी अध्यापन किया और वहाँ से इस्तीफा देकर सन् 1939 तक वे कोलंबिया विश्वविद्यालय में दर्शन का शिक्षण करते रहे। उन्हें अमेरिका में को 'व्यवहारवाद' का प्रमुख पैरोकार माना जाता है। कोलंबिया विश्वविद्यालय में ही डॉ. भीमराव अम्बेडकर उनके छात्रों में से एक छात्र रहे।

उनकी प्रमुख पुस्तकों में 'विद्यालय और समाज'(1899), 'द चाइल्ड एंड द करिकुलम' (1902), 'हाउ वी थिंक' (1910), 'शिक्षा और लोकतंत्र' (1916), द पब्लिक एंड इट्स प्रॉब्लम(1927) आदि शामिल हैं।

शिक्षा और लोकतंत्र

अमेरिका उन्नीसवी सदी के उत्तरार्ध में औद्योगीकरण के फलस्वरूप तेज़ी से सरल खेतिहर समाज से औद्योगिक शहरी राष्ट्र के रूप में उभर रहा था। डीवी अपने शिक्षा दर्शन द्वारा जीवनपर्यंत चिंतन करते रहे, कैसे इन सामजिक और आर्थिक परिवर्तनों के बीच किसी लोकतान्त्रिक समाज को बचाया जा सकता है? उनके अनुसार, वास्तविक लोकतंत्र महज़ सरकारी तंत्र और रस्मों तक सीमित नहीं रहता, अपितु वह ऐसी गत्यात्मक प्रक्रिया है, जिसमें सिर्फ़ राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक तंत्र ही नहीं बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में सक्रिय और बराबर की भागीदारी अपेक्षित है।

डीवी यह मानते थे, विद्यालय को समाज के छोटे रूप में होना चाहिए, जो लोकतंत्र के विकास में सहयोगी हो। उनकी दृष्टि में स्कूल भविष्य में स्थित जीवन की तय्यारी मात्र नहीं बल्कि अपने आप में जीवन ही है। बच्चों को लोकतान्त्रिक जीवन में सक्रीय भागीदारी के अवसर मिलें इसलिए विद्यालय में बच्चों को लोकतंत्र की सबसे बेहतर तय्यारी के अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए। वही भविष्य में देश के नागरिकों के रूप में अपनी विविध भूमिकाओं को निभायेंगे। उनका विद्यालयी जीवन लोकतान्त्रिक आस्थाओं का पूर्वाभ्यास होना चाहिए.

गतिविधि और खोज

डीवी उन सार्वजनिक विद्यालयों के गंभीर आलोचक थे, जो छात्रों की रुचियों पर मौन रहते हैं या उनकी तरफ़ कभी दृष्टि भी नहीं डालते। उनकी दृष्टि में छात्र किसी विद्यालय में निष्क्रिय प्राणी की तरह नहीं आता। यह नजरिया विद्यालयों को कारखानों के सामान मानने वाली व्यवस्था से उपजा विचार है, जहाँ छात्र और छात्राएं कच्चे माल की तरह हैं, जिन्हें कक्षा के भीतर शिक्षक अपनी मर्ज़ी से आकार देते हैं। डीवी की दृष्टि में यह आकार देने की बात उनके विचारों से एकदम मेल नहीं खाती। बच्चे स्वयं तय करेंगे, उन्हें कैसा दिखना है। अध्यापक उसके एवज़ में कोई निर्णय नहीं करेंगे।

उन्होंने अपनी पुस्तकों ('विद्यालय और समाज') तथा अनेकों लेखों ('मेरी शिक्षाशास्त्रीय आस्था' आदि) में कई दफे इस बात को स्पष्ट किया है कि बच्चों के निरंतर बौद्धिक विकास और विषयों के प्रति रूचि बनाये रखने के बाद ही हम उनके शैक्षिक अनुभवों को गुणात्मक रूप से परिवर्तित कर सकते हैं। इसमें वह शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करते हुए कहते हैं, बच्चों की कक्षा में निरुद्देश्य स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं है। शिक्षक ही वह व्यक्ति होगा, जो शिक्षा के अनुभवों को पुनर्गठित कर सकने की क्षमता रखता है। वह निर्देश नहीं देगा। वह बस बच्चों में उन अनुभवों को निर्देशित करने के कौशल का विकास कर सकता है। वह उसके सीखने का साथी है।

लेकिन वह यहीं सबसे ज़्यादा सचेत होने की आवश्यकता पर भी लगातार बल देते हैं। उनके अनुसार वह युक्तियाँ, उदाहरण, कौशल जो उनके शिक्षक के पास हैं, वह उन बच्चों की युक्तियाँ, कौशल आदि नहीं हो सकते। जिन उपायों से शिक्षक किसी समस्या का हल निकालता है, वह उसका कौशल है। बच्चे जब तक अपने आप से उन समस्याओं के हल निकालने के लिए प्रेरित नहीं किये जायेंगे और वह स्वयं उन प्रक्रियाओं में लगातार असफल होते हुए भी हिम्मत के साथ उन्हें सुलझाने में लगे रहेंगे, तब एक क्षण ऐसा आएगा, जब उनके द्वारा खोजा गया हल केवल उनका अपना होगा। उसे सुलझाने का अनुभव जब तक वे स्वयं नहीं करेंगे, तब तक यह सीखना पूरा नहीं होगा।

शिक्षा की विषयवस्तु

अब चूँकि हमें पता है, डीवी के यहाँ सीखना किसे कहते हैं। उनकी दृष्टि में गतिविधि में शिक्षक की भूमिका क्या होनी चाहिए, इसका भी एक नक्शा हमारे पास है, तब हमारे लिए यह समझ पाना इतना कठिन नहीं होना चाहिए कि डीवी की नज़र में शिक्षा की विषयवस्तु क्या होनी चाहिए।

चलिए एक उदाहरण से स्पष्ट करते हैं। एक छोटा सा सवाल कक्षा में पूछा गया, 'हमारे घरों में रोटी किससे बनती है'? बच्चों की पाठ्यपुस्तक के पास एक उत्तर है, गेहूँ। पर डीवी इससे संतुष्ट नहीं होने वाले। वह कहेंगे, इस प्रश्न को बच्चे के सामजिक जीवन से जोड़ना ज़रूरी है। उनकी नज़र में भूगोल, विज्ञान, इतिहास अपने आप में विषयवस्तु नहीं हैं न इस विषयों के मध्य का सह-सम्बन्ध ही शिक्षा का वास्तविक केंद्र हो सकता है। उनके अनुसार विद्यालय और कक्षा के चारों तरफ़ छितरी हुई सामजिक गतिविधियाँ ही इस ज्ञान का केंद्र हो सकती हैं। आपको समझने में यदि समस्या आ रही हो, तब हम प्रश्न पर वापस लौट सकते हैं।

सवाल था, रोटी किसकी बनती है? डीवी के लिए बच्चों का सिर्फ़ जवाब के रूप में 'गेहूँ' को जान लेना शिक्षा या ज्ञान का पर्याय नहीं है। उनकी दृष्टि में गेहूँ के बीज से लेकर खेत में छह महीने का इंतज़ार, फ़िर उसे पीसने पर आटा बनने और उसके घर में रोटी बनने तक की प्रक्रिया को जान लेना 'शिक्षा की विषवस्तु' है।